साधू जनु सुगमु, मारिगु डुसिनि मोख जो,
सामी रखियो कंहिं सूरिमे, कलिपत पारि कदमु,
मारे कयो जंहिं मन जो, भोलाओ सभु भसमु
घर में घरु अगमु, पाए वेठो पाकु थी.

सामी साहब कहते हैं कि सच्चे साधु-संत मनुष्य को मोक्ष प्राप्त करने का आसान मार्ग बताते हैं। विरल कोई शूर वीर ही इस मार्ग को अपना कर स्वयं को संयशों और भ्रमों से छुड़ाकर, मन के समस्त भ्रम आदि भस्म कर पाया है। उसके पश्चात् वह पवित्र/निर्मल होकर अपने ही घर (देह, शरीर) भीतर अगम्य घर (आत्मा) में परमात्मा को प्राप्त कर पाया है।

सच्चे साधु-संत परोपकारी होते हैं। अपने अस्तित्व की अपेक्षा भगवान के अस्तित्व का बोध कराने वाले संत जन मानो समाज का कल्याण करने वाले आध्यात्मिक वैद्य होते हैं। वे सांसारिक जीवों को भक्ति केंद्रित बोध/ज्ञान प्रदान करते हैं, परमार्थ की दृष्टि से भक्तों को ज्ञानी करने का प्रयत्न करते हैं। विषयों से दूर रहने का परामर्श देते हैं। राम नाम के जाप की औषधि देकर वे मनुष्यों के भव रोग के दु:ख को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। संतों ने अपने सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा पुराने/प्राचीन तत्व मूल्यों को तोड़-मरोड़ अथवा भंजन न करते हुए उनका शुद्धिकरण एवं प्रसंगानुसार नवीनीकरण करते हुए धर्म, संप्रदाय एवं धर्म-विचार पर अधिष्ठित समाज का अस्तित्व अबाधित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसलिए सभी संत समाजाभिमुख होते दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने समाज को एक योग्य दिशा दिखाने का कार्य किया है। समाज-मन के चिंतन को एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान की है। जीवन को सँवारने, कल्याणकारी बनाने के लिए परमात्मा की भक्ति करने का एक सरल साधन देने वाले संतों ने तो मोक्ष-प्राप्ति का एक सीधा मार्ग भी बता दिया है। वह है अपने ही मन-मंदिर में परमेश्वर के दर्शन करने का मार्ग। अपने मन को निर्मल और पवित्र बनाने के लिए सभी संतों ने सत् वचनों की वर्षा की है। अपने मन को विकार रहित बनाना है, मन में छिपे हुए काम, क्रोधादि षड् रिपुओं से लड़ कर उन्हें अंदर से निकाल देना है। फिर शुद्ध भक्ति करना है। यही सरल मार्ग है नाम-स्मरण का! अपने ही हृदय में प्रभु को पाकर दर्शन का आनंद अनुभव करने का।

■